BA-II IV Paper
विषय-कहानी

हिन्दी विभाग
डॉ गीता कुमारी

Date - 15.10.2020
Time - 11:45 से 1:20 pm

बूढ़ी काकी कहानी में वृद्ध समस्या

मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक समस्याओं को प्रमुखता से उठाया गया है। बूढ़ी काकी नामक कहानी भी इसी कोटि की कहानी है। जिसमें वृद्धजनों के प्रति समाज में उपेक्षा की पनपती समस्या को स्वभाविक ढंग से चित्रित किया गया है। लेखक ने गंभीरता के साथ बूढ़ी काकी के साथ होने वाले जिस उपेक्षापूर्ण व्यवहार को उठाया है वह अकेली काकी के ही साथ नहीं है अपितु समाज में ऐसे कितने ही वृद्ध है। पंडित बुद्धिराम जैसे लालची लोग मीठी-मीठी बातों में बहला-फुसला बूढ़ी से उनकी सम्पत्ति अपने नाम लिखवा लेते हैं। खूब लम्बे-चौड़े वायदे करते हैं, किंतु लेकिन बहुत जल्दी ही उसका घिनौना रूप सामने आ जाता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुढ़ापा आते ही मानव के स्वभाव में बचपन के गुण आने लगते हैं, बूढ़ी काकी के आचरण में भी इसके लक्षण थे, लेकिन कहानीकार कहता है कि यह सब बात पंडित बुद्धिराम को उस समय सोचनी चाहिए थी, जब वह आश्वासनों पर विश्वास बूढ़ी काकी ने डेढ़-दो सौ रुपये प्रतिवर्ष की आय वाली जायदाद उसके नाम लिख दी थी। यह ठीक है कि बूढ़ी काकी अपनी इच्छा पूरी न होते देख रोने-चीखने लगती थी, परन्तु

इसके सिवा वह कर भी क्या सकती थी।

कहानीकार कहता है कि पंडित बुद्धिराम और उनकी पत्नी रूपा का व्यवहार एक दम बदल गया और वे ये भूल गये कि वे आज जिस सम्पत्ति के मालिक है वह सब इसी बूढ़ी काकी की दी हुई है। गाँव में मिली प्रतिष्ठा सम्पत्ति की वजह से कारण है लेकिन जिसकी जायदाद है इसके लिए भरपेट भोजन तक भी नहीं है। मुख्य कारण बूढ़ी काकी इच्छाएं अतृप्त रहती है। साथ कहानीकार ने ध्यान आकर्षित किया है कि भूख और जीभ का स्वाद मनुष्य को कहाँ तक गिरा सकता है। और खाती है अपमानित होती है, भला बुरा सुनती है, परन्तु मन में भूख की लालसा रह-रहकर उसे बेचैन करती रहती है। इसके पीछे मुंशी प्रेमचन्द ने समाज में व्याप्त असभ्यता की ओर ध्यान खींचा है जहाँ बूढ़ों की भावनाओं की कद्र नहीं होती। आज की नयी पीढ़ी वृद्धों को अपनी आधुनिकता के मार्ग में बाधक समझती है। यहाँ तक कि उनका मज़ाक भी उड़ाया जाता है। बूढ़ी काकी कहानी में लेखक ने बुद्धिराम के लड़कों द्वारा न केवल उसे चिढ़ाया जाता है, अपितु उसके ऊपर मुँह से पानी के कुल्ले करना आम बात है। बूढ़ी काकी को नोचकर भाग जाते हैं तो कभी चोटी से खींचकर भाग जाते हैं।

लेकिन बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा अपने लड़कों को डाँटना तो दूर मना तो नहीं करते। इस तरह के व्यवहार से भी परिवार के बंधन टूट जाते हैं। यह स्थिति अकेली बूढ़ी काकी की नहीं, अपितु सम्पूर्ण समाज की है जिसमें युवाओं द्वारा वृद्धों के प्रति दुर्व्यवहार किया जाता है।

इस तरह लेखक ने स्वयं बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा के व्यवहार को उस समय घृणास्पद बना दिया है जब वह काकी पकवानों की खुशबू से अधीर होकर हलवाइयों के पास कड़ाह के पास जा बैठती है। रूपा एक तरफ तो मेहमानों के इशारों पर नाच रही है, वहीं दूसरी तरफ कड़ाह के पास बूढ़ी काकी को बैठी देख आग बबूला हो जाती है। अपशब्द बोलती है और कहती है कि उसकी नरेटी में मलाई है कि चुपचाप अपनी कोठरी में चली जाए। विवश और लाचार काकी के पास जाने के सिवा कोई रास्ता नहीं होता। मन मारकर सोचती रहती है। इसके माध्यम से कहानीकार कहना चाहता है कि आखिर बड़े-बूढ़ों की भी इच्छा होती है।

जिस तरह सगाई-विवाह समारहों में शामिल होकर आप आनन्द लेना चाहते हैं, उसी प्रकार उन्हें क्यों नहीं शामिल करते। झूठा प्रदर्शन करने से कोई लाभ नहीं। बाहर से अतिथियों की भी हर इच्छा पूरी करने का प्रयास किया जाता है लेकिन अपने घर के वृद्धों की उपेक्षा की जाती है, जो किसी भी तरह उचित नहीं माना जा सकता।

मुंशी प्रेमचन्द ने इस कहानी के माध्यम से वृद्धों की उपेक्षा करने वाले स्वार्थी बुद्धिराम जैसे लोगों को समाज के भीतर उस समय नगाकर किया है जब बूढ़ी काकी अधीर होकर दावत खा रहे लोगों के बीच आ बैठती है और सभी लोग उसकी बदहाली को देखकर कौन है, कौन है कहकर चिल्लाने लगते हैं।

यहाँ तक कि उसका भतीजा बुद्धिराम आकर आकर उसे दोनों हाथों से उठाकर कोठरी में ले जाकर पटक देता है और खूब खरी-खोटी सुनाता है। बुढ़िया चुपचाप पड़ी रहती है और कोई उसे खाने तक को नहीं पूछता।

PAGE NO.
DATE :

उस समय समाज की दशा और भी दयनीय हो जाती है जब वह बुढ़िया लाडली को हाथ पकड़कर पत्तल को जूठन चाटने लगाती है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी कहानी बूढ़ी काकी में वर्तमान समाज की ज्वलन्त वृद्ध-समस्या को सहजता और स्वाभाविकता के साथ प्रभावी ढंग से उठाया है। बूढ़ी काकी की दुर्दशा को देखकर मानवीय हृदय ने केवल करुणा एवं सहानुभूति से भर उठता है, आत्मचिंतन के लिए बाध्य सा कर देता है।

Scanned with CamScanner